भारत और अरब देशों के संबंधों पर एक अध्ययन

श्री पूरणमल मीना

सह आचार्य

राजनीति विज्ञान

राजकीय महाविद्यालय राजगढ़; अलवरद्व

सार

मार्च 2002 में विशेष सचिव (पूर्व) की काहिरा यात्रा के दौरान भारत और अरब राज्यों के लीग (आमतौर पर अरब लीग के रूप में संदर्भित) ने दोनों पक्षों के बीच संवाद की प्रक्रिया को संस्थागत बनाने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। भारत-अरब राजनीतिक परामर्श का पहला दौर इस दौरे के दौरान हुआ। समझौता ज्ञापन दोनों पक्षों की भारत और अरब राज्यों के बीच दोस्ती और सहयोग के पारंपरिक संबंधों को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए उत्सुकता व्यक्त करता है। यह न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के उद्घाटन सत्र के दौरान ईएएम और एएलएसजी के बीच वार्षिक बैठकों के लिए श्रमसंस्मर रूप से सुविधाजनक और वैकल्पिक रूप से नई दिल्ली और काहिरा में जब भी आवश्यक हो और दोनों पक्षों के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए यात्राओं / बैठकों का प्रावधान करता है। क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय कार्यक्षेत्रों पर आम हित के मुद्दों पर। समझौता ज्ञापन संयुक्त आर्थिक सहयोग के क्षेत्रों की पहचान करता है, और अरब लीग से संबद्ध निकायों के साथ बातचीत करता है। भारत को अरब लीग में विशेष दर्जा भी दिया गया है, जो इसे अरब लीग परिषद की बैठकों में भाग लेने और कुछ दस्तावेजों तक पहुंच बनाने में सक्षम बनाता है।

मुख्य शब्द भारत ए अरब

परिचय

भारत के पारंपरिक रूप से अरब देशों के साथ घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं। ये संबंध प्राचीन काल से हैं। ओमान से लेकर मिस्र, सूडान और उससे आगे के देशों में महत्वपूर्ण भारतीय निवेश हैं। पूरे इतिहास में इस क्षेत्र के साथ सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। हमारा अधिकांश विदेशी व्यापार स्वेज नहर, लाल सागर और अदन की खाड़ी से होकर गुजरता है। फिलिस्तीनी मुद्दे के प्रति भारत की दृढ़ प्रतिबद्धता, प्रमुख अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों पर आम विचार और मजबूत आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध आज भारत-अरब संबंधों की नींव हैं। अरब देशों के साथ हमारा कुल द्विपक्षीय व्यापार 110 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है और यह क्षेत्र 4.5 मिलियन भारतीयों का घर है और हमारे ऊर्जा आयात के 70% को पूरा करता है। अरब लीग के साथ भारत के संस्थागत संबंधों ने अरब देशों के साथ भारत के संबंधों को और मजबूत किया है और हाल के वर्षों में भारत और अरब लीग के बीच हुए आदान-प्रदान से इसका उदाहरण मिलता है।

उद्देश्य

1. भारत और अरब देशों के संबंधों का अध्ययन करने लिए

2. भारत और अरब राज्यों के लीग के बीच संवाद की प्रक्रिया का अध्ययन करने लिए

संस्थागत संबंध

मार्च 2002 में विशेष सचिव (पूर्व) की काहिरा यात्रा के दौरान भारत और अरब राज्यों के लीग (आमतौर पर अरब लीग के रूप में संदर्भित) ने दोनों पक्षों के बीच संवाद की प्रक्रिया को संस्थागत बनाने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। भारत-अरब राजनीतिक परामर्श का पहला दौर इस दौरे के दौरान हुआ। समझौता ज्ञापन दोनों पक्षों की भारत और अरब राज्यों के बीच दोस्ती और सहयोग के पारंपरिक संबंधों को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए उत्सुकता व्यक्त करता है। यह न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के उद्घाटन सत्र के दौरान ईएएम और एएलएसजी के बीच वार्षिक बैठकों के लिए स्पर्सर रूप से सुविधाजनक और वैकल्पिक रूप से नई दिल्ली और काहिरा में जब भी आवश्यक हो और दोनों पक्षों के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए यात्राओं / बैठकों का प्रावधान करता है। क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय कार्यक्षेत्रों पर आम हित के मुद्दों पर। समझौता ज्ञापन संयुक्त आर्थिक सहयोग के क्षेत्रों की पहचान करता है, और अरब लीग से संबद्ध निकायों के साथ बातचीत करता है। भारत को अरब लीग में विशेष दर्जा भी दिया गया है, जो इसे अरब लीग परिषद की बैठकों में भाग लेने और कुछ दस्तावेजों तक पहुंच बनाने में सक्षम बनाता है। परामर्श के अगले दो दौर भी मई 2003 में और जून 2004 में काहिरा में आयोजित किए गए थे। परामर्श का चौथा दौर मई 2007 में नई दिल्ली में आयोजित किया गया था और पांचवां दौर अगस्त 2010 में काहिरा में आयोजित किया गया था। भारतीय पक्ष से सचिव (पूर्व) और अल पक्ष से अरब लीग (एएल) के महासचिव के कैबिनेट प्रमुख द्वारा। दिसंबर 2008 में तत्कालीन।सैठ आमरे मौसा की भारत यात्रा के दौरान, अरबइंडिया कोऑपरेशन फोरम (।पब्थ) की स्थापना के लिए एक सहयोग ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे। दिसंबर 2008 में हस्ताक्षरित एमओयू पांच साल में समाप्त हो रहा है और उसके बाद इसे नवीनीकृत किया जाना है। फोरम के लिए कार्य योजना में शामिल हैं

राजनीतिक परामर्श के लिए वार्षिक तंत्र की स्थापना,

5 अरब-भारत प्रदर्शनी के साथ वार्षिक अरब-भारत साझेदारी सम्मेलन और इसके किनारे अरब-भारत संगोष्ठी,

5 भारत में विश्वविद्यालयों के प्रमुखों का वार्षिक सम्मेलन जिसमें अरब/पश्चिम एशिया/मध्य पूर्व अध्ययन के साथ-साथ एएल सदस्य राज्यों के विभाग हैं,

5 एएल सदस्य देशों में अरब-भारत उत्सव नियमित आधार पर और भारत में वार्षिक विरासत उत्सव।

5 एसएमई क्षेत्र में विशेषज्ञों का द्विपक्षीय आदान-प्रदान,

5 संयुक्त उद्यमों सहित ऊर्जा क्षेत्र में द्विपक्षीय निवेश,

5 ऊर्जा सहयोग के लिए वरिष्ठ अधिकारी स्तरीय संवाद तंत्र,

5 अरब पेशेवरों में अरब राजनयिकों का प्रशिक्षण,

5 अरब और भारतीय विश्वविद्यालयों में अरब-भारतीय शिक्षा पीठों की स्थापना,

5 डिजिटल अरबी पांडुलिपियों के डेटाबेस का निर्माण,

5 मीडिया सहयोग और पत्रकारों के वार्षिक द्विपक्षीय आदान-प्रदान को बढ़ाना

दिसंबर 2010 में, काहिरा में भारतीय राजदूत को दिसंबर में अरब-भारत सहयोग मंच की स्थापना के लिए सहयोग ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के बाद भारत-अरब लीग सहयोग के एक नए स्तर पर पहुंचने के मद्देनजर। स् में भारत के स्थायी प्रतिनिधि के रूप में नामित किया गया था।

उन्नीस नब्बे के दशक की शुरुआत से, पिछली शताब्दी में, भारत ने बाजार नियंत्रित उच्च विकास अर्थव्यवस्था प्राप्त करने के लिए अबाधित आर्थिक सुधारों का अनुसरण किया है। इसने भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था की श्रेणी में ला खड़ा किया है। में क्रय शक्ति समानता के मामले में भारत का सकल घरेलू उत्पाद केवल चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद था। इसके अलावा, भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया की सभी अर्थव्यवस्थाओं में से एक उच्चतम विकास दर को बनाए रखने में सक्षम थी। भारत ने कभी दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था रहे चीन को भी पीछे छोड़ दिया है। के दौरान चीनी अर्थव्यवस्था में 6.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि इसी अवधि के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था ने 7.1 प्रतिशत की वृद्धि दर प्रदर्शित की। भारत के पास विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों का विशाल भंडार है लेकिन भारत के पास तेल और गैस के सीमित भंडार हैं। इसके परिणामस्वरूप भारत इन वस्तुओं का बड़े पैमाने पर आयात करता है। अर्थव्यवस्था में उच्च वृद्धि के साथ, तेल और गैस की आवश्यकता बहुत अधिक बढ़ गई है। इसके अलावा, भारत के पास कुशल और अकुशल दोनों प्रकार के मानव संसाधनों की एक महत्वपूर्ण मात्रा है। संक्षेप में, विशाल संसाधन आधार और विशाल बाजार के साथ भारत जैसी बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था आर्थिक सहयोग के असीमित अवसर उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त रूप से उपयुक्त है। अरब देशों के साथ भारत के संबंध युगों पुराने हैं। हमारे अध्ययन के लिए अरब लीग के सभी सदस्य देशों को ध्यान में रखा गया है।

लीग ऑफ अरब स्टेट्स की स्थापना 1945 में छह सदस्यों के साथ की गई थी। वर्तमान में इसके बाईस सदस्य हैं। इनमें से कई देशों के पास तेल और गैस के बड़े भंडार हैं। अल्जीरिया, इराक, कुवैत, लीबिया, कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) के सदस्य हैं। ये देश अरब पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन के भी सदस्य हैं। इसके अलावा, कुछ अरब देश जैसे बहरीन, मिस्र, सीरिया और ट्यूनीशिया अरब पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (व्.अ.स.स.) के सदस्य हैं। ओमान एक अरब तेल निर्यातक देश है लेकिन ओपेक के किसी भी ओपेक का सदस्य नहीं है। तो सूडान और यमन है। उनके बीच में, अरब देशों में वैश्विक तेल भंडार का 55.4% और वैश्विक गैस भंडार का 27.7% है। इनमें से कुछ अरब देशों जैसे अल्जीरिया, जॉर्डन, मोरक्को और ट्यूनीशिया में फॉस्फेट और पोटैश के समृद्ध भंडार और निर्यातक हैं। अरब देश एक साथ लिया एक बड़ा बाजार है। यह पत्र भारत-अरब आर्थिक संबंधों के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करेगा जिसमें निर्यात और आयात व्यापार, भुगतान संतुलन और जनशक्ति और प्रेषण के मुद्दे शामिल हैं। पेपर ऊर्जा के साथ-साथ गैर-ऊर्जा क्षेत्रों में सहयोग के दायरे पर भी चर्चा करेगा। अरब देशों के साथ भारत के आर्थिक संबंधों पर साहित्य की उपलब्धता दुर्लभ है। अलग-अलग अरब देशों या अरब दुनिया के कुछ क्षेत्रों के साथ भारत के आर्थिक संबंधों पर कई काम हुए हैं। हालाँकि, इस साहित्य की समीक्षा अध्ययन के लिए फायदेमंद होगी। एस.एस. मेहता ने अपने अग्रणी कार्य में भारत-अरब आर्थिक संबंधों के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया है।

यह भारत-अरब व्यापार के रुझानों, पैटर्न और कमोडिटी संरचना के बारे में एक व्यापक अध्ययन है। यह पेपर काफी कीमती होता है। हालाँकि, यह अध्ययन लगभग तीन दशक पहले किया गया था और इसलिए अध्ययन को अद्यतन करने की अत्यावश्यकता है। बृज मोहन ने अपने लेख 'भारत-खाड़ी व्यापार संबंधरूप में ए पर्सपेक्टिव' में भारत-खाड़ी व्यापार का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। यह पेपर भी काफी व्यापक है। लेकिन सभी

अरब देशों को कवर करने के लिए अध्ययन का विस्तार करने की जरूरत है। अध्ययन को अद्यतन करने की भी आवश्यकता है क्योंकि यह अध्ययन भी लगभग तीन दशक पहले किया गया था। सुभाष नरूला ने अपनी पुस्तक 'इंडियाज गल्फ एक्सपोर्ट्सरू फीचर्स, ट्रेड्स एंड प्रॉस्पेक्ट्स' में खाड़ी में भारत के निर्यात प्रदर्शन पर एक अग्रणी काम किया है। हालांकि, अध्ययन भारत-खाड़ी व्यापार के केवल एक पहलू तक ही सीमित है। यह अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं का अध्ययन नहीं करता है। इसके अलावा, सभी अरब देशों को कवर करने के लिए इस अध्ययन का विस्तार करने की आवश्यकता है। अध्ययन को भी अद्यतन करने की आवश्यकता है क्योंकि इन दशकों के दौरान महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। जावेद अहमद खान ने "इंडिया एंड वेस्ट एशियारू इमर्जिंग मार्केट्स इन द लिबरलाइजेशन एरा" नामक पुस्तक लिखी है। हालांकि यह अध्ययन भी काफी व्यापक है। लेकिन इस अध्ययन में क्षेत्र के बाहर के कई अरब देशों को भी शामिल नहीं किया गया है। सभी अरब देशों को शामिल करने के लिए अध्ययन का विस्तार करने की आवश्यकता है। इसे अद्यतन करने की भी आवश्यकता है क्योंकि अध्ययन दो दशक पहले प्रकाशित हुआ था। मुहम्मद अजहर ने अपनी पुस्तक 'समकालीन खाड़ी अर्थव्यवस्थाएं और भारत-खाड़ी संबंध' में खाड़ी के अरब देशों के साथ भारत के आर्थिक संबंधों का व्यापक अध्ययन किया है। हालांकि, इस अध्ययन में अरब देशों की एक छोटी संख्या भी शामिल है।

यही कारण है कि भारत-अरब आर्थिक संबंधों का अध्ययन करने के लिए इसका विस्तार करने की आवश्यकता है। इसे अद्यतन करने की भी आवश्यकता है क्योंकि यह अध्ययन भी दो दशक पहले प्रकाशित हुआ था। मुहम्मद अजहर ने अपने पेपर 'इंडो-जॉर्डन ट्रेडरू परफॉरमेंस एंड प्रॉस्पेक्ट्स' में जॉर्डन के साथ भारत के व्यापार के सभी पहलुओं का अध्ययन किया है। यह पेपर इस विषय का गहन विश्लेषण करता है। हालांकि, यह फिर से केवल एक अरब देश से संबंधित है। और इसलिए अन्य अरब देशों को भी अध्ययन में शामिल करने की जरूरत है। मुहम्मद अजहर ने अपने लेख 'भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच आर्थिक सहयोग' में फिर से भारत-यूई आर्थिक संबंधों के विभिन्न पहलुओं का गहन अध्ययन किया है। हालांकि, यह पेपर एक अकेले अरब देश का भी अध्ययन करता है। और इसलिए सभी अरब देशों को शामिल करने के लिए अध्ययन का विस्तार करने की अत्यावश्यकता है। मुहम्मद अजहर ने अपने पेपर 'भारत और सऊदी अरब के बीच आर्थिक सहयोग' प्रदर्शन और संभावनाएं में सऊदी अरब के साथ भारत के आर्थिक सहयोग के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया है। सऊदी अरब अरब दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। हालांकि, अकेले सऊदी अरब पर एक अध्ययन को पूरे अरब जगत के लिए सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है। मुहम्मद अजहर ने अपने लेख 'भारत और कुवैत के बीच आर्थिक सहयोग' प्रदर्शन और संभावनाएं में भारत और कुवैत के बीच व्यापार और आर्थिक संबंधों के विभिन्न पहलुओं से संबंधित है।

भारत के कुवैत के साथ कई अन्य अरब देशों के साथ आर्थिक संबंध काफी जीवंत हैं। हालांकि, इसे पूरे अरब देशों के लिए सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है। मुहम्मद अजहर ने अपने पेपर 'भारत और बहरीन के बीच आर्थिक सहयोग' प्रदर्शन और संभावनाएं में भारत और बहरीन, एक अरब देश के बीच व्यापार और आर्थिक संबंधों में विभिन्न रुझानों का अध्ययन किया है। अध्ययन निश्चित रूप से विषय पर ज्ञान के भंडार में एक योगदान है। हालांकि, यह भी उसी सीमा से ग्रस्त है जैसा कि पहले चर्चित साहित्य। इसलिए इस गैप को भरना जरूरी है। और यह भारत और सभी अरब देशों के बीच आर्थिक संबंधों पर एक साथ अध्ययन करने की तात्कालिकता को दर्शाता है। वर्तमान अध्ययन 'ऊर्जा और गैर-ऊर्जा दोनों क्षेत्रों में अरब दुनिया के साथ भारत के आर्थिक संबंधों का विस्तृत विश्लेषण' है। अध्ययन में 2006-07 से 2016-17 तक लगभग एक दशक की अवधि शामिल है। इस शोध के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए व्यापक पद्धति कार्यरत है। अध्ययन विशेष रूप से द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। प्रासंगिक डेटा मुख्य रूप से भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के निर्यात आयात डेटा बैंक जैसे सबसे विश्वसनीय स्रोतों से एकत्र किया गया है। अध्ययन को सार्थक बनाने के लिए अनुभवजन्य सारणियों का प्रयोग

किया गया है। डेटा की उपलब्धता के आधार पर, डेटा का विश्लेषण करने और तार्किक निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए सरल सांख्यिकीय उपकरण लागू किए जाते हैं। कम्प्यूटरी संरचना के व्यापक अध्ययन के डिजिट कोड वर्गीकरण का उपयोग किया गया है।

1. भारत-अरब आर्थिक संबंधों का समग्रता में अध्ययन करना।
2. ऊर्जा क्षेत्र में भारत-अरब आर्थिक संबंधों का अध्ययन करना।
3. गैर-ऊर्जा क्षेत्र में भारत-अरब आर्थिक संबंधों का अध्ययन करना।
4. ऊर्जा और गैर-ऊर्जा क्षेत्रों में भारत-अरब आर्थिक संबंधों के भविष्य का अध्ययन करना

सम्मेलन का उद्देश्य भारत और अरब दुनिया के बीच संपर्क के लंबे इतिहास को समझना है और यह समझना है कि कैसे इसने गतिशील और पारस्परिक रूप से लाभकारी बातचीत में योगदान दिया है। इसने कला, वास्तुकला, और सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक आदान-प्रदान की समृद्धि के साथ एक विशाल इतिहास को साझा करने के लिए प्रेरित किया है। प्राचीन काल से ही भारत और अरब जगत के बीच व्यापार थल और समुद्र के माध्यम से होता रहा है। समुद्र ने दो भूमियों को विभाजित कर दिया; एक ओर अरबों की पवित्र भूमि थी और दूसरी ओर आर्यावर्त की तलहटी। भारतीय जहाजों के आने-जाने के लिए समुद्र और भूमि मार्ग बन गए, और एक क्रॉनिकल को उद्धृत करने के लिए, षूत्र और मसाले, कपास और रेशम, शॉल और मलमल, मोती और माणिक, चांदी के ब्रोकेड और सोनाष अरब और मेसोपोटामिया के लिए। दोनों सभ्यताओं और क्षेत्रों की परस्पर क्रियाएं केवल व्यापार, वाणिज्य और आर्थिक गतिविधियों तक ही सीमित नहीं थीं। जिन मुख्य क्षेत्रों में अधिक सार्थक आदान-प्रदान हुआ, वे थे विज्ञान, साहित्य, कला, दर्शनशास्त्र, धर्म, अकादमिक बातचीत आदि। दोनों समुदायों का अपने-अपने स्थानों की मौजूदा संस्कृतियों और प्रथाओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

इन सांस्कृतिक आदान-प्रदानों और विद्वतापूर्ण संचारों को ऊपर वर्णित सभी क्षेत्रों में विस्तृत तरीके से खोजा जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि अब्बासिद काल के दौरान, ये सांस्कृतिक और विशेष रूप से, बौद्धिक आदान-प्रदान अपने चरम पर थे। विभिन्न अब्बासिद सम्राट व्यक्तिगत रूप से खगोल विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य, गणित आदि से संबंधित विभिन्न भारतीय ग्रंथों का अनुवाद करने में शामिल थे। भारतीय इतिहास में विभिन्न चरणों के दौरान, कई यात्री अरब दुनिया से भारत आए थे। अल-बरूनी का नाम सभी नामों में सबसे अलग है। उन्होंने अरबी में काम के एक विशाल निकाय का अनुवाद किया है। अपनी एक प्रसिद्ध कृति किताब फी तहकीक मलिल हिंद (भारत पर शोध) में उन्होंने भारत का राजनीतिक और सैन्य इतिहास बताने के बजाय सांस्कृतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक और धार्मिक इतिहास का वर्णन किया। अपने काम में, उन्होंने अपनी सेवाएं प्रदान कीं और अरब जगत में भारत की सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विरासत का प्रतिनिधित्व किया। यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि भारत और अरब दुनिया के बीच सांस्कृतिक संपर्क केवल साहित्यिक विचारों के प्रसार तक ही सीमित नहीं है। भारत के कई इस्लामी सामाजिक सुधार आंदोलनों की तरह सांस्कृतिक आदान-प्रदान का भी बहुत प्रभाव पड़ा। आधी सदी से भी अधिक समय से, भारत-अरब संबंध एक अलग पथ पर रहे हैं जो उन्हें पहले की अवधि से अलग करता है। भारत से अरब दुनिया में प्रवासन की अपेक्षाकृत हालिया घटना भी भारत-अरब संबंधों में एक नया आयाम जोड़ती है, जिस पर एक सांस्कृतिक प्रतिमान के आलोक में चर्चा करने की आवश्यकता है। इन मुद्दों पर विचार-विमर्श करने के लिए, भारत-अरब सांस्कृतिक केंद्र, जामिया मिलिया इस्लामिया, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली में 14 से 15 दिसंबर तक भारत-अरब संबंधों पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन करेगा। भारत। सामाजिक वैज्ञानिकों से निम्नलिखित व्यापक विषयों पर पत्र आमंत्रित किए जाते हैं।

- S भारत-अरब संबंधों का सांस्कृतिक इतिहास
- S साझा सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराएं
- S सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को स्थापित करना
- S ओ भारत और अरब दुनिया; त्रिपक्षीय संबंध के क्षेत्रीय आयाम
- S आर्थिक भागीदारीरू व्यापार, वाणिज्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान
- S वैश्वीकरण और उभरती प्रवृत्तियाँ और चुनौतियाँ
- S स्पाइस रूट व्यापार और सांस्कृतिक उत्पाद
- S तटीय क्षेत्रों में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत
- S भारतीय सिनेमा और अरब दुनिया में इसका स्वागत।
- S भारत और अरब जगतरू विचलन और अभिसरण का स्थान

निष्कर्ष

ये संबंध प्राचीन काल से हैं। ओमान से लेकर मिस्र, सूडान और उससे आगे के देशों में महत्वपूर्ण भारतीय निवेश हैं। पूरे इतिहास में इस क्षेत्र के साथ सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। हमारा अधिकांश विदेशी व्यापार स्वेज नहर, लाल सागर और अदन की खाड़ी से होकर गुजरता है। फिलीस्तीनी मुद्दे के प्रति भारत की दृढ़ प्रतिबद्धता, प्रमुख अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों पर आम विचार और मजबूत आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध आज भारत-अरब संबंधों की नींव हैं। अरब देशों के साथ हमारा कुल द्विपक्षीय व्यापार 110 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है और यह क्षेत्र 4.5 मिलियन भारतीयों का घर है और हमारे ऊर्जा आयात के 70% को पूरा करता है। अरब लीग के साथ भारत के संस्थागत संबंधों ने अरब देशों के साथ भारत के संबंधों को और मजबूत किया है और हाल के वर्षों में भारत और अरब लीग के बीच हुए आदान-प्रदान से इसका उदाहरण मिलता है।

संदर्भ

1. डॉ. अनूप बर्मन। (2016)। हूपला और हाइप्स पर भारत-यूई निवेश और व्यापार संबंध व्यावहारिकता। कूटनीति और उससे आगेरू विशेष रिपोर्ट यूई-भारत, जून, 2010 को से लिया गया।
2. हीना गोयल, अंजलि शर्मा। (2011)। संयुक्त अरब अमीरात के साथ भारत का व्यापारिक व्यापाररू विकास, संभावनाएं और भविष्य की क्षमता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट,,142-149।
3. नीलांजना कुमार। (2012)। भारत के पूर्व और पश्चात उदारीकरण अवधि के निर्यात प्रदर्शन पर आर्थिक संकेतकों का प्रभाव। यूरोपियन जर्नल ऑफ बिज़नेस एंड मैनेजमेंट, 22-33।
4. मीना सिंह रॉय, मो. मुदस्सर क्रमर। (2010)। भारत-यूई संबंधरू सामरिक साझेदारी के नए आयाम, रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान।

5. बलदेव राज नायर। (2006)। भारत का वैश्वीकरणरू आर्थिक परिणामों का मूल्यांकन। पूर्व-पश्चिम केंद्र वाशिंगटन प्रकाशन।
6. राजमोनी वेणु। (2009)। पौराणिक मित्रता के उत्सव में भारत और संयुक्त अरब अमीरात। दुबई, यूएई। मोटिवेट पब्लिशिंग के सहयोग से इंडियन एक्सप्रेस मैनेजमेंट कंसल्टेंसी
7. रोहमा सदाकत। (2007)। दिरहम से पहले यूएई रुपए का इस्तेमाल करता था। 27 जनवरी, 2017 को खलीज टाइम्स से लिया गया।
8. चक्रवर्ती सुकल्प। भारत की पश्चिम की ओर देखो नीति और सीरियाई पहेली। विश्व फोकस। 2010
9. जू-यू-आई। भारत की मध्य-पूर्व ऊर्जा रणनीति। अध्ययन के लिए अल जज़ीरा केंद्र। 2011
10. महालिंगम एस. ईरान-पाकिस्तान-भारत गैस पाइपलाइन परियोजना की राजनीति। इनरू आईपी खोसला, संपादक। एनर्जी एंड डिप्लोमेसी, कोणार्क, नई दिल्ली महमूद; 2005
11. निंगथौजम अल्विते। भारत-सऊदी अरब संबंधरू नई ऊंचाइयों को छूनारू प्रधान मंत्री मोदी की रियाद की नवीनतम यात्रा बढ़ते संबंधों को रेखांकित करती है। राजनयिक। 2008
12. सीकरी राजीव। चुनौती और रणनीतिरू भारत की विदेश नीति पर पुनर्विचार। नई दिल्लीरू साधु; 2009